ॐ

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला – पंचदश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

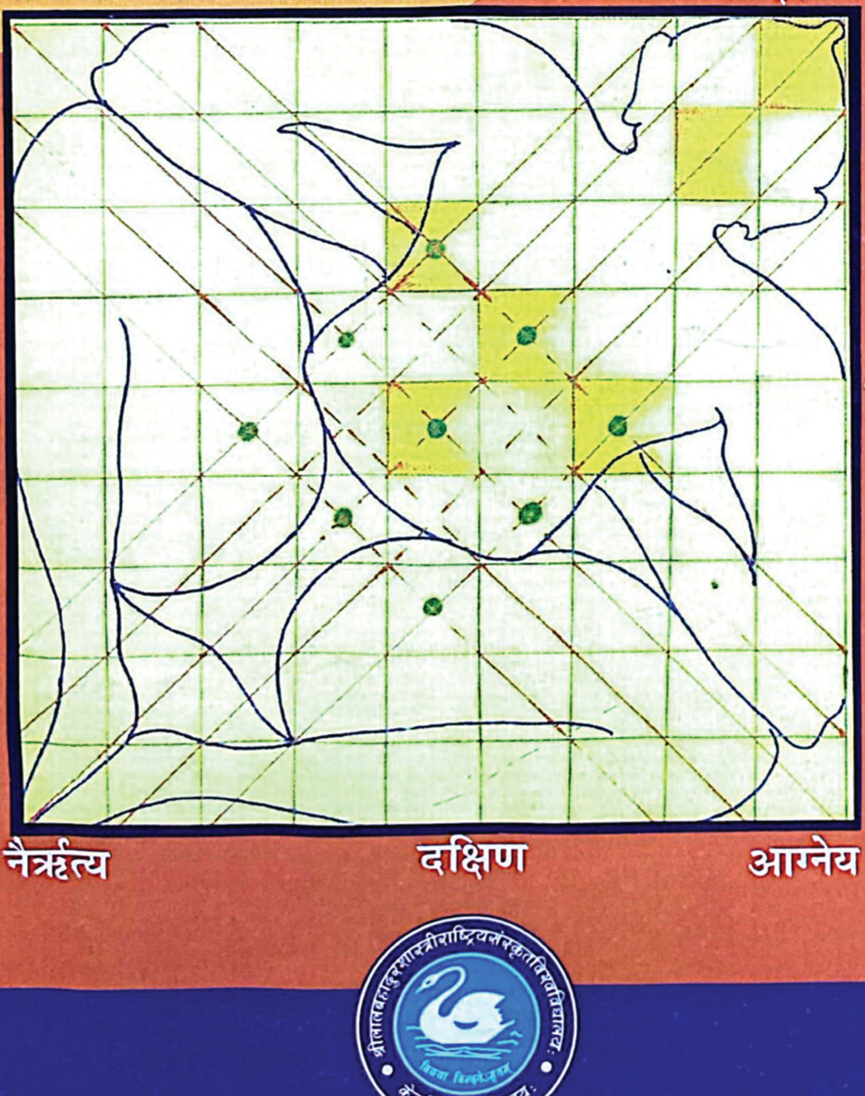

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली–110016

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-पंचदश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी
आचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

पुरो वाक्

सर्वविदित है कि भारतवर्ष धर्मप्राण देश है। मनु का स्पष्ट उद्घोष है कि – **वेदोऽखिलो धर्ममूलम्।**[1] अर्थात् धर्म का मूल वेद है । अतः हमारे साहित्य में धार्मिक चर्चा का उपलब्ध होना आश्चर्य की बात नही है। भारतीय साहित्य में समागत विचार किसी न किसी रूप में वेदों से निःसृत हैं। वेदों की ऋचाओं में देवतादि की स्तुति के साथ ही तत्कालीन सामाजिक परिवेश भी परिनिष्ठित है, जिससे उस समय की उन्नत कला एवं संस्कृति का दिग्दर्शन हो जाता है। कला का ही एक स्वरूप वास्तुशास्त्र भी है, जिसके शिल्प, आलेखन, स्थापत्यकला, मूर्तिकला आदि प्रभेद हैं। इसीलिए अर्थशास्त्र के उपवेद के रूप में स्थापत्य वेद समादृित है। यथा –

आयुर्वेदं धनुर्वेदं गान्धर्ववेदमात्मनः।
स्थापत्यं चासृजद्वेदं क्रमात्पूर्वादिभिर्मुखैः।।[2]

मानव अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति कला के माध्यम से करता है, जो आत्मानुभूति या सत्यानुभूति भी है। अतः कला मात्र भावप्रदर्शन तक सीमित नहीं रहती, अपितु आध्यात्मिक सन्देश का आदान प्रदान भी करती है। यह अभिव्यक्ति की मूल प्रवृत्ति पर विराजमान होकर व्यापक एवं अमर हो जाती है। जीवन के अनेक अनुभवों का मूल्य कला के द्वारा ही समझ में आता है। संस्कृति का अभिज्ञान कला के माध्यम से ही होता है। भारतीय कला नित्य धर्म की अनुगामिनी रही है, अतः आध्यात्मिकता इसका सहज गुण है। डॉ वासुदेव उपाध्याय के शब्दों में – भारत में कला विषय आत्मपरक है। भारतीय कला को समझने के लिए सूक्ष्म दृष्टि चाहिए। कलाकार सत्य का उपासक होता है। यही कारण है कि आध्यात्मिक कला साधना द्वारा भारतीय कलाकार और उनकी लोककल्याण कला अमर है।[3]

वैदिक काल से ही भारत की शिल्प कला ने विश्व को चमत्कृत किया है। वेदमन्त्रों में वर्णित यज्ञवेदियाँ, गृह–दुर्ग–ग्रामादिवास्तु आदि इसके प्रमुख उदाहरण हैं। कुछ विद्वान् भ्रमवश लगभग 2000 वर्षपूर्व महायान मत के आरम्भ के साथ ही प्रतिमापूजन का आरम्भ मानते हैं, परन्तु उससे पूर्व ही वैदिक वाङ्मय के आलोडन से स्पष्ट है कि भारतीय मूर्तिकला भी निश्चित रूप से वेदकाल में भी गरिमामय स्थान पर समारूढ़ थी। ऋग्वेद

---

1 मनुस्मृति 2.6

2 श्रीमद्भागवतमहापुराण तृतीय स्कन्ध 12.39

3 प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान अध्याय 1, पृ. 3

विषयानुक्रमणिका

1.	वास्तुशास्त्रानुसारेण गृहसज्जा	**डॉ. अशोकथपलियालः,** सहाचार्यः वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६ **पंकज सेमल्टी** शोधच्छात्रः वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६	1-7
2.	वास्तुशास्त्रदृष्टया बहुतलीयावासीयभवनेषु शालविधानविमर्शः	**डॉ. देशबन्धुः** सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६ **विनयककुरेती** शोधच्छात्रः वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६	8-18
3.	व्याकरणशास्त्रदृष्ट्या वास्तुशब्दावलिविचारः	**डॉ. अखिलेश कुमार द्विवेदी** सहायकाचार्यः व्याकरणविभागः महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिकविश्वविद्यालयः उज्जयिनी, म.प्र.	19-25
4.	राजवल्लभवास्तुशास्त्रानुसारेण गृहारम्भे मासविचारः	**डॉ. प्रवेशव्यासः** सहायकाचार्यः वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६ **आचार्य अमितजोशी** शोधच्छात्रः वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६	26-30

5.	वैदिकवाङ्मये वास्तुशास्त्रम्-एकमध्ययनम्	**डॉ.कपिलदेव हरेकृष्ण शास्त्री** सहायकाचार्यः परम्परागतसंस्कृतविभागः कलासंकायः, महाराजा सयाजीरावविश्वविद्यालयः बडोदरा, गुजरातः - 390002	31-40
6.	प्रासादे प्रतिमानिर्माणम्	**डॉ. ब्रजेश कुमारः** ग्लोबल संस्कृत फोरम्, नवदेहली	41-46
7.	वराहमिहिरानुसारेण वास्तुभूमेः शुभाशुभत्वम्	**बालमुकुन्द झा** शोधच्छात्रः, ज्योतिषविभाग कामेश्वरसिंहसंस्कृतविश्वविद्यालयः दरभंगा, बिहारः	47-52
8.	वास्तुपदस्थदेवतानां शुभाशुभत्वविमर्शः	**मृत्युञ्जयत्रिपाठी** शोधच्छात्रः, वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६	53-62
9.	दानवानां विश्वकर्मा मयासुरः	**डॉ अव्यक्त रैणा** शोधच्छात्रः, वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६	63-71
10.	अथ गृहप्रवेशः	**प्रो. हरिहरत्रिवेदी** अध्यक्षचरः पौरोहित्यविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६	72-76
11.	पर्यावरणवास्तु के शास्त्रीय, कलात्मक एवं वैज्ञानिक पक्ष	**प्रो. हंसधर झा** आचार्य एवं अध्यक्ष, ज्योतिषविभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल-परिसर, भोपाल (मध्यप्रदेश)	77-85
12.	व्यावसायिक-वास्तु	**प्रो. मदनमोहन पाठक** आचार्य एवं अध्यक्ष, ज्यौतिषविभाग केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय, लखनऊ-परिसर लखनऊ, उ० प्र०	86-91

13.	मौर्यकालीन कौटिलीय अर्थशास्त्र में वर्णित पर्यावरण एवं कृषि संरक्षण तथा संवर्द्धन सम्बन्धी नीति	**प्रो डी.पी. सकलानी** आचार्य, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, हे0न0ब0ग0वि0वि0 श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखण्ड, 246174। **डॉ. प्रेम बहादुर** सहायक आचार्य, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, हे0न0ब0ग0वि0वि0 श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखण्ड, 246174।	92–106
14.	वैदिक वास्तुकला की अवधारणा	**डॉ. हनुमानमिश्रः** सहाचार्य, वेदविभाग श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नवदेहली-१६	107–112
15.	पुराणों में प्रासाद के प्रकार एवं लक्षण	**डॉ. आशुतोष कुमार झा** सहायकचार्य ज्योतिष श्रीरामसुन्दर संस्कृत विश्वविद्या प्रतिष्ठान आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, रमौली, दरभंगा, बिहार	113–117
16.	भूगोल एवं पर्यावरण के आलोक में भारतीय वास्तुशास्त्र	**डॉ. शुभम् शर्मा** सहायक प्राध्यापक ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान विभाग महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन , मध्यप्रदेश	118–123
17.	बृहत्संहिता में वास्तुविद्या	**डॉ. धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी** सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय राँची	124–144
18.	वास्तुशास्त्र अध्यापन में 'करके सीखना' विधि का प्रयोग	**डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार** सहायकाचार्य, शिक्षा संकाय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	145–151
19.	दुर्ग-वास्तु निरूपण	**डॉ. राजीव कुमार मिश्र** सहायकाचार्य मोदी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय लक्ष्मणगढ़, सीकर, राजस्थान	152–158

20.	श्री जगन्नाथ मन्दिर का वास्तु-शास्त्रीय अध्ययन	**डॉ. नीलमाधवदाश** संविदा प्राध्यापक, ज्योतिष विभाग केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रीसदाशिव परिसर, पुरी, उडीसा	159–163
21.	संस्कृत ग्रन्थों में शिल्पशास्त्र विद्या का उल्लेख	**डॉ. विशाल भारद्वाज** असिस्टैण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।	164–169
22.	'वास्तुशास्त्र' – परिचयात्मकानुशीलन	**डॉ. कृष्णकुमार भार्गव** सहायकाचार्य – वास्तुशास्त्र राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति	170–175
23.	भारतीय वास्तुशास्त्रानुसार भवन में चित्राङ्कन पद्धति	**डॉ. रीता गुप्ता** पोस्ट डॉक्टरल फैलो, संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	176–178
24.	वास्तुपुरुषोत्पत्ति विमर्श	**डॉ. रीतिका जैन** पी.डी.एफ. शोधच्छात्रा-वास्तुशास्त्र विभाग श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नवदेहली-१६	179–186
25.	The Importance and Benefits of Vastushastra in Human Society	**Dr. Nilachal Mishra** Lecturer in Sanskrit K.C.P.A.N Jr. College, Bankoi, Khurda, Odisha	187–189
26.	Bioenergetic Architecture	**Ar. Raman Vig** Lecturer in Sanskrit K.C.P.A.N Jr. College, Bankoi, Khurda, Odisha	190–192

		Gauhati University		
37	Ushati (print only)	Central Sanskrit University, Ganganath Jha Campus	2277-680X	NA
38	Vagvai Brahma	Central Sanskrit University	2457-0729	NA
39	Vaidika Vag Jyotih	Gurukula Kangri Vishwavidyalaya	2277-4351	NA
40	Vakyartha Bharati	Central Sanskrit University	2249-538X	NA
41	Vastushastra Vimarsh (print only)	Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha	0976-4321	NA
42	Vedavipasha	Central Sanskrit University	2348-7828	NA
43	Vedvidya	Maharshi Sandipani Vedavidya Pratishtanam	2230-8962	NA
44	Vishveshvaranand Indological Journal (print only)	Vishveshvaranand Vishwa Bandhu Institute of Sanskrit and Indological Studies, Panjab University	0507-1410	NA
45	Vyasasrih	Maharshi Vyasadev National Research Institute	2320-2025	NA

https://ugccare.unipune.ac.in/apps1/home/index